



“ आ नो भद्राः
क्रतवो यन्तु विश्वतः
समस्त सद् विचार सभी दिशाओं
से हमारे पास आएँ ”

संस्कृतम्

कक्षा-6



कक्षा-7



कक्षा-8

शैक्षणिक दृष्टि एवं लक्ष्य

भारतीय शिक्षा बोर्ड (BSB) ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप एक शिक्षा प्रणाली विकसित की है, जो विद्यार्थियों के समुचित मानसिक विकास और विद्यार्थी-केन्द्रित शैक्षणिक दृष्टिकोणों के संवर्धन हेतु अत्याधुनिक वैज्ञानिक अनुसन्धान आधारित शिक्षा को हमारी स्वदेशी विद्यालयी शिक्षा प्रणाली—गुरु-शिष्य परम्परा के साथ सहजता से एकीकृत करती है। भाषायी शिक्षा के क्षेत्र में इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु भारतीय शिक्षा बोर्ड का पाठ्यक्रम समकालीन वैज्ञानिक एवं तकनीकी आधारित भाषायी शिक्षा के साथ-साथ प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) द्वारा प्राप्त हुए ज्ञान का समन्वय करके निर्मित किया गया है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF 2023) के सिद्धान्तों के अनुरूप निर्मित भारतीय शिक्षा बोर्ड का प्रारम्भिक स्तर से लेकर माध्यमिक स्तर तक का पाठ्यक्रम योग्यता आधारित शिक्षा और छात्रों के बीच 21वीं सदी के कौशल आधारित गुणों के विकास पर बल देता है। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य विद्यार्थियों में विवेचनात्मक बुद्धि, रचनात्मक विचार और समस्या-समाधान कौशल का पोषण करना है, जो निरन्तर गतिशील संसार में आजीवन सीखने की प्रक्रिया और सफलता के लिए आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, भारतीय शिक्षा बोर्ड द्वारा शिक्षकों के निरन्तर कौशल विकास हेतु विभिन्न प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है जिससे कि वे पाठ्यक्रम को प्रभावी ढंग से सम्पन्न कर सकें तथा प्रत्येक विद्यार्थी सीखने के सफल और अधिकतम रूप से आत्मसात् कर सकें।



संस्कृत-प्रभा- ६, ७, ८

(प्रथमभागः, द्वितीयभागः, तृतीयभागः)

संस्कृतपाठ्यपुस्तिकानां शृंखला

षष्ठ-कक्षातः अष्टम-पर्यन्तम्



ISBN : 978-81-982230-3-6

ISBN : 978-81-982230-7-4

ISBN : 978-81-982230-6-7

षष्ठ-कक्षातः अष्टमकक्षापर्यन्तं माध्यमिकस्तरे संस्कृतभाषावगमनार्थं संसाधनम्। अस्यां शृंखलायाम् अधोलिखिताः पाठ्यांशाः सामग्र्यश्च समाहिताः सन्ति—

- पाठ्यपुस्तिकानां नामानि संस्कृत-प्रभा इति वर्तते।

एतासु पाठ्यपुस्तिकासु भारतगौरवगीतम्, पञ्चतन्त्रकथा, रामायणम्, महाभारतम्, वैदिकवाङ्मयम्, योगविज्ञानम्, आयुर्वेदः, अनिर्दिष्टाः भारतस्य वीराः, वनवासिवीराः, सुभाषितानि, भारतविभूतयः, भारतीयसांस्कृतिकनिधिः, भारतीयज्ञाननिधिः व्याकरणांशाश्चेत्यादयः विविधाः गौरवधायकाः रोचकाश्च विषयाः प्रदत्ताः सन्ति।

- संस्कृत-प्रभा इत्येतासां पाठ्यपुस्तिकानाम् अध्ययनाय डिजिटलशिक्षणसामग्री अपि सम्पृक्तास्ति।
- पाठ्यविषयवस्तुबोधनाय शिक्षकसन्दर्शिका वर्तते।

पुस्तक प्रबोधिका

भारतीय शिक्षा ज्ञान विज्ञान के साथ उन्नत आचार-विचार, उत्तम चरित्र, त्याग, सत्य, शील, स्नेह, अहिंसा, करुणा, दया आदि श्रेष्ठ मानवीय गुणों का सर्जन करने वाली निर्मल अजस्र धारा है। जिसका अवगाहन करने वाले भारतीय मनीषियों के विषय में कहा गया है कि उनके उत्तम चरित्र से इस धरा के मानव शिक्षा प्राप्तकर श्रेष्ठ आचारवान् होते हैं-

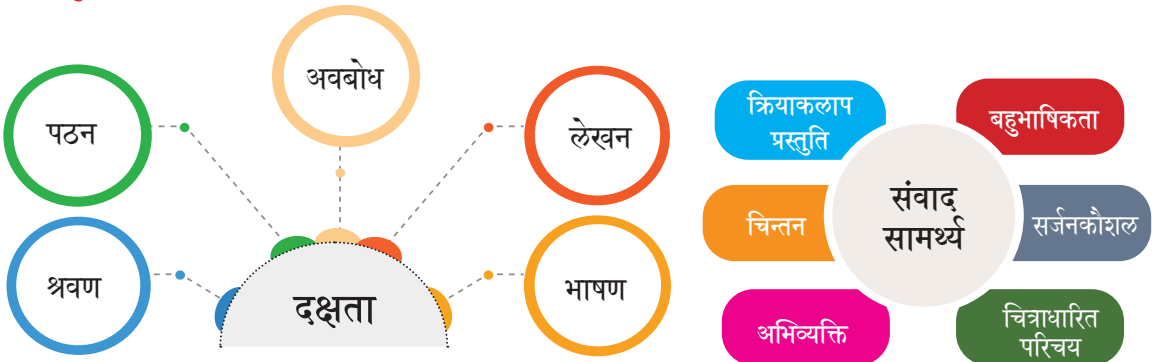
एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।

स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥

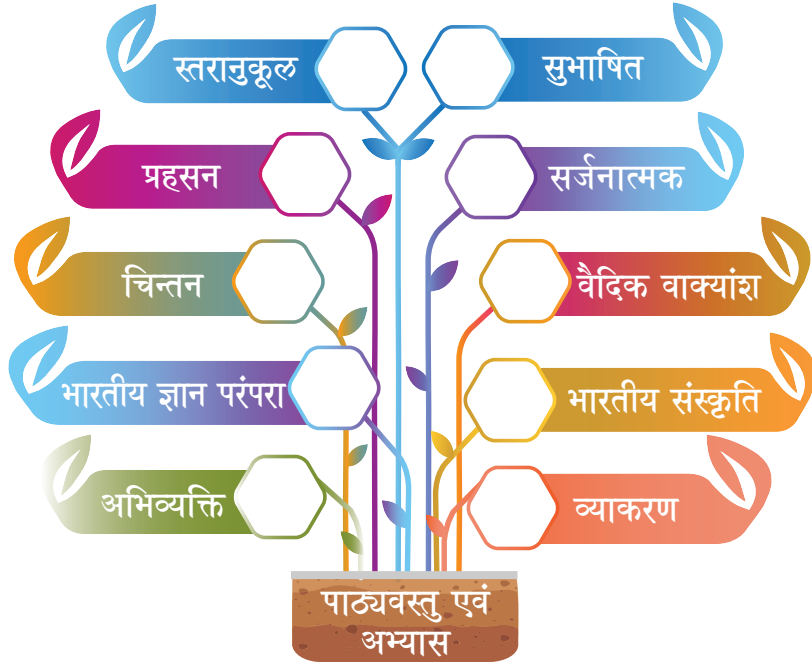
यह शिक्षा व्यवस्था भारतीय गुरुकुलों एवं तक्षशिला आदि विश्वविद्यालयों में देशी विदेशी सभी जनों हेतु प्रदान की जाती थी, जिसके प्रायः समस्त ग्रन्थ संस्कृत भाषा तथा ब्राह्मी, शारदा, नेवारी, देवनागरी आदि लिपियों में लिखे गए। यह भाषा विश्व की सबसे प्राचीन एवं समृद्ध भाषा है जो भारतीय ज्ञान के असीमित प्रवाह का आधार है इसीलिए भारतीय शिक्षा बोर्ड पहली कक्षा से ही संस्कृत भाषा पढ़ाने की अनुशंसा करता है क्योंकि यह भारत की परम्परा प्राप्त संस्कृति, इतिहास, दर्शन, आयुर्वेद और विभिन्न ज्ञान और विज्ञान को यथावत् शुद्ध रूप में व्यक्त करने का एक मात्र साधन है।

‘संस्कृत-प्रभा’ कक्षा छठी से आठवीं के छात्रों के लिए संस्कृतभाषा सीखने हेतु एक सरल एवं वैविध्यपूर्ण नवीन पुस्तक है। यह पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2023 में निर्दिष्ट भाषा सम्बन्धी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। जिसमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति में निर्दिष्ट भाषाओं के संवर्धन हेतु बहुभाषिकता आदि वैशिष्ट्य सम्पृक्त हैं।

इस पुस्तक में...



पुस्तक में विद्यमान पाठ न केवल पढ़ने और मनोरंजन के लिए है, बल्कि ये सदाचरण, अच्छा व्यवहार और अच्छी जीवन शैली भी सिखाते हैं, जिससे अध्येता का चरित्र और जीवन परिष्कृत व उन्नत हो सके। पुस्तक



में यथास्थान विभिन्न प्रसङ्गों पर पाठ्यविषयवस्तु द्वारा ऐसी प्रेरणा प्रदान की गई हैं जिनसे बच्चों में अपने देश और अपनी संस्कृति पर गर्व की भावना जागृत हो सके।

इस पुस्तक को रुचिपूर्ण बनाने के लिए विविध क्रीडाविधियों का प्रयोग किया गया है। इसमें सूचना संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) और खेल तकनीकों का उपयोग करके कराया गया भाषा का अभ्यास महत्वपूर्ण और आनन्ददायक है। इन विशेषताओं ने इस पुस्तक को और अधिक रोचक तथा सरल बना दिया है।

अध्यापन हेतु प्रदत्त शिक्षण निर्देश विषय के अध्यापन हेतु मार्ग प्रशस्त करेगा साथ ही साथ छोटे छात्रों को सरल ढंग से विषय बोध हेतु प्रभावी होगा। पुस्तक में पढ़ें और याद रखें अभ्यास में छोटे वाक्यांश और मंत्र शामिल हैं जो छात्रों को आजीवन प्रेरणा और मार्गदर्शन हेतु अत्यन्त उपयोगी हैं। ये आगे चलकर विद्यार्थियों के लिए भावी जीवन में पथप्रदर्शन हेतु नेत्र के समान होंगे। यथा—

ब्राह्मे मुहूर्ते बुद्धयेत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्।

कायक्लेशांश्च तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च ॥ (मनुस्मृति:-४.९२)

पुस्तक के अन्त में कुछ महत्वपूर्ण स्मरणीय अंश भी दिए गए हैं, जो छात्रों के भावी जीवन में बहुत उपकारक होंगे। इन स्मरणीय अंशों में भारतीय ज्ञान की निधि के रूप में वेद, उपनिषद्, गीता, रामायण, महाभारत, योगसूत्र, आयुर्वेद, बौद्ध, जैन और गुरु ग्रन्थ के वचन शामिल हैं। यह पाठ्यविषयवस्तु छात्रों के उज्ज्वल भविष्य तथा संस्कृति और परम्पराओं के संरक्षण हेतु आधारभूत तत्त्व के रूप में सिद्ध होगी।

विषयानुक्रमणिका कक्षा- ६

	प्रार्थना	वेदमन्त्राः	
1.	वन्दे मातरम्	गीतम्	1
2.	अपरीक्ष्य न कर्तव्यम्	कथा	8
3.	एवा मे प्राण मा बिभेः	वेदमन्त्राः	15
✳	सुभाषितानि (स्वाध्याय-पाठः)	पद्यम्	22
4.	कालचक्रम्	निबन्धः	24
5.	रामो नाम जनैः श्रुतः	रामायणपद्यम्	33
6.	कुत्र किं श्रेष्ठम्	आयुर्वेद-गद्यपद्यम्	40
✳	ग्राम्य-वन्यपशुविषये संवादः (स्वाध्याय-पाठः)	संवादः	48
7.	राजन् केन च बुद्धिमान्	महाभारतपद्यसंवादः	51
8.	अष्टाङ्ग-योगः	योगः, पद्यम्	58
9.	मनुवचनामृतम्	पद्यम्	67
✳	सम्राट् विक्रमादित्यः (स्वाध्यायपाठः)	गद्यम्	74
10.	न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः	संवादः	77
11.	तमुवाच हृषीकेशः	श्रीमद्भगवद्गीता	86
12.	भारतस्य गौरवं गौरादेवी	निबन्धः	93
✳	अस्माकं पूर्वजाः (स्वाध्यायपाठः)	भारत-विभूतयः	103
✳	भारतीयसांस्कृतिकनिधिः	प्राच्यग्रन्थ-सम्पदा	106
✳	व्याकरणबोधः (स्वाध्याय-पाठः)	व्याकरणम्	107
✳	भारतीय-ज्ञाननिधिः, शब्दरूपाणि, धातुरूपाणि	स्मरणीयभागः	113-122

विषयानुक्रमणिका कक्षा- ७

	प्रार्थना	वेदमन्त्राः	
1.	प्रियं भारतम्	गीतम्	1
2.	धर्मबुद्धि-पापबुद्धिकथा	कथा	9
3.	वेदवचनामृतम्	वेद-मन्त्राः	18
✳	गुरुभक्तः आरुणिः वेदः उत्तङ्गश्च (स्वाध्यायपाठः)	निबन्धः	29
4.	रामस्यात्मसमः सखा	रामायणम्	31
5.	सम्राट् अशोकः तस्य धर्मलिपयश्च	कथा	40
6.	कर्मण्येवाधिकारस्ते	श्रीमद्भगवद्गीता	52
✳	आयुर्वेदोऽमृतानाम् (स्वाध्यायपाठः)	चरकसंहिता	61
7.	सद्वृत्तम्	आयुर्वेद	62
8.	योगस्य मूलं शीलम्	योगः	71
9.	मरुद्भिरिन्द्रः सख्यं ते अस्तु	उपनिषद्-कथा	80
✳	तां सर्वदा स्मरत पावनमातृभूमिम् (स्वाध्यायपाठः)	देशप्रेम	90
10.	कश्च धर्मः परो लोके	महाभारतम् संवादः	91
11.	वृक्षाः सत्पुरुषा इव	श्लोकाः	102
12.	संथालवीरः तिलकामाँझी	निबंधः	113
✳	अस्माकं पूर्वजाः (स्वाध्यायपाठः)	भारतविभूतय	123
✳	भारतीयसांस्कृतिकनिधिः	प्राच्यग्रन्थ-सम्पदा	125
✳	संस्कृतव्याकरणबोधः (स्वाध्यायपाठः)	व्याकरणम्	126
✳	भारतीय-ज्ञाननिधिः, शब्दरूपाणि, धातुरूपाणि	स्मरणीयभागः	130-136

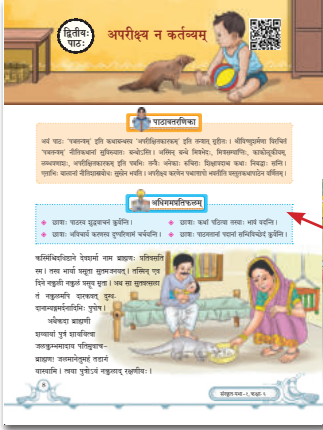
विषयानुक्रमणिका कक्षा- ८

	प्रार्थना	वेदमन्त्राः	
1.	स मे प्रियो भारतभव्यदेशः	पद्यम्	1
2.	उपायेन जयः	कथा	9
3.	सांमनस्यसूक्तम्	वेदमन्त्राः	19
✱	जीर्णे भोजनमात्रेयः (स्वाध्याय-पाठः)	कथा	27
4.	अयोध्या नाम नगरी	रामायणम्	29
5.	आचार्यानुशासनम्	उपनिषद्	37
6.	ब्रह्मचारि-यौगन्धरायण-संलापः	नाटकम्	45
✱	भर्तृहरि-सुभाषितानि (स्वाध्याय-पाठः)	श्लोकाः	55
7.	यमनियम-स्वरूपम्	योगसंवादः	57
8.	गुणत्रय-विभागः	श्रीमद्भगवद्गीता	68
9.	श्रीरामचरितम्	कथा	76
✱	राजा भोजः (स्वाध्यायपाठः)	निबन्धः	84
10.	चतस्रः विद्याः	गद्यम्	87
11.	काश्मीरप्रदेशः	संवादः	95
12.	तलकल-चन्दुः	निबन्धः	104
✱	कारक-समास-परिचयः (स्वाध्याय-पाठः)	व्याकरणम्	111
✱	अस्माकं पूर्वजाः (स्वाध्याय-पाठः)	भारत-विभूतयः	117
✱	भारतीयसांस्कृतिकनिधिः	प्राच्यग्रन्थ-सम्पदा	119
✱	भारतीय-ज्ञाननिधिः, शब्दरूपाणि, धातुरूपाणि	स्मरणीयभागः	120- 141

पुरतकरय वैशिष्ट्यम्

पाठावतरणिका

पाठ्यवस्तुविषये पाठ्यांशस्य उद्देश्यं परिचयात्मकं विवरणं च पाठावतरणिकायां विद्यते।



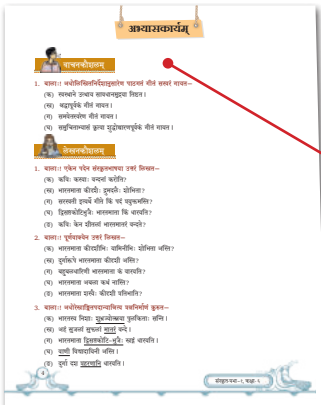
अधिगमप्रतिफलम्

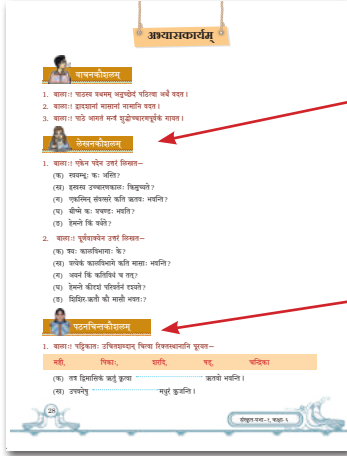
अधिगमप्रतिफलं पाठस्य अध्ययनेन शिक्षार्थिषु जायमानं परिवर्तनं द्योतयति।

शब्दविस्तरः

अनेन छात्राः पाठे समागतानां शब्दानां पर्यायशब्दान् जानन्ति। हिन्दीभाषायाम् आङ्ग्लभाषायां च शब्दार्थं जानन्ति। स्वमातृभाषायामपि शब्दार्थं लिखन्ति। अनेन शब्दज्ञानस्य संवर्धनं भवति।

शब्दः	वर्गः	हिन्दी	English	मातृभाषा
बन्धे	व्यक्ति	नमस्कार ई	I salute	
दुग्धम्	पशुस्य दुग्धम्	दुग्धम्	To enough and the best water	
दुग्धम्	दुग्धम्	दुग्धम्	To the best and abundant fruits	
मातृशालम्	बन्धने शालम्	बन्धने शालम्	The coarseness of sandalwood	
मातृशालम्	दुग्धम् शालम्	दुग्धम् शालम्	Look to crops	
दुग्धम्	दुग्धम्	दुग्धम्	To the night, full of bright moonlight	
दुग्धम्	दुग्धम्	दुग्धम्	To be adorned with the blooming flowers	
दुग्धम्	दुग्धम्	दुग्धम्	Having a beautiful face	
दुग्धम्	दुग्धम्	दुग्धम्	From the united lyrical sound of seven cross throats	
दुग्धम्	दुग्धम्	दुग्धम्	With fourteen cross arms	
दुग्धम्	दुग्धम्	दुग्धम्	Armed with sharp swords	
दुग्धम्	दुग्धम्	दुग्धम्	One who holds iron weapons	
दुग्धम्	दुग्धम्	दुग्धम्	To the pure	
दुग्धम्	दुग्धम्	दुग्धम्	To the innumerable	





लेखनकौशलम्

लेखनाभ्यासेन छात्राणां दृढबोधः लेखनं च सुन्दरं भवति।



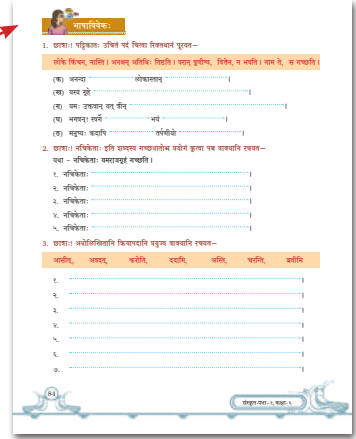
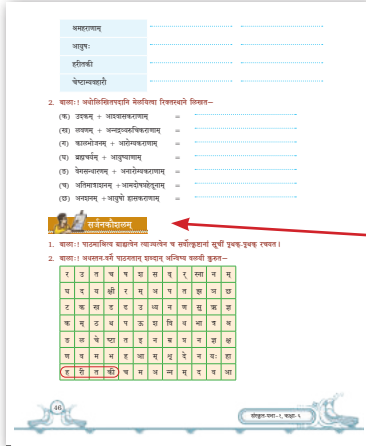
पठनचिन्तनकौशलम्

अनेन अभ्यासेन छात्राणां पठनकौशलं पठितविषये चिन्तनेन तेषाम् अवबोधश्च वर्धते।



भाषाविवेकः

अनेन अभ्यासेन छात्रेषु भाषायाः व्याकरणस्य पद-पदार्थानां च अवबोधसामर्थ्यं वर्धते।



सर्जनकौशलम्

अनेन अभ्यासेन छात्राणां विचारशक्तिः, सर्जनशक्तिः, सदसद्-विवेकश्च वर्धते।



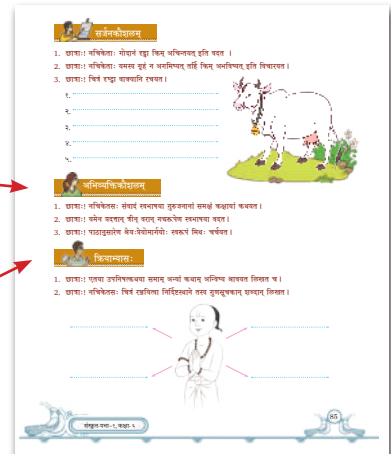
अभिव्यक्तिकौशलम्

अनेन छात्रेषु परस्परं संवादस्य, वाद-विवादयोः स्वाभिप्राय-कथनस्य च सामर्थ्यं वर्धते।



क्रियाभ्यासः

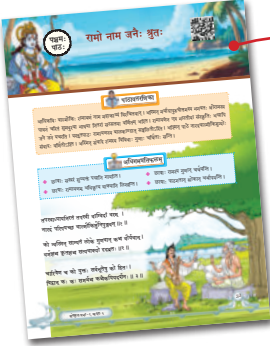
क्रियाभ्यासेषु विविधाः रोचकक्रियाकलापाः प्रदत्ताः सन्ति।
तैः छात्राणाम् अधिगमः दृढः भवति।



पाठ्यपुस्तकेषु विशिष्टम्

वैदिकविद्या

विश्ववाङ्मये प्राचीनतमाः ग्रन्थाः वेदाः सन्ति इति विदुषां मतम् । ते च वेदाः चत्वारः सन्ति- ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः अथर्ववेदश्चेति । परवर्तिकाले वेदानाश्रित्यैव भारतवर्षे संस्कृतवाङ्मयस्य विकासः प्रसारश्च अभूत् । वेदज्ञानं समाधिप्रज्ञया ऋषिभिः साक्षात्कृतम् अनुभूतं च । अस्य भाषा सहजा सरला सुग्राह्या चास्ति ।



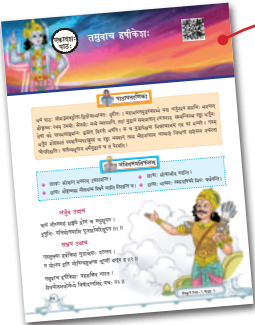
रामायणम्

आदिकविः वाल्मीकिः रामायणं नाम महाकाव्यं विरचितवान् । अस्मिन् मर्यादापुरुषोत्तमस्य भगवतः श्रीरामस्य पावनं चरितं सुमधुरया भाषया नितरां सरसतया वर्णितम् अस्ति । रामायणेन एव भारतीया संस्कृतिः अद्यापि जने जने प्रचरति प्रसरति च ।



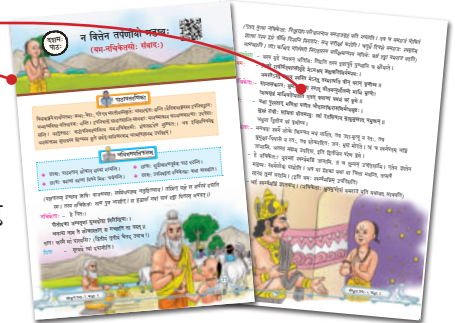
उपनिषद्-कथा

विश्ववाङ्मये प्राचीनतमाः ग्रन्थाः वेदाः, एते एव भारतीयसंस्कृतेः आधारभूताः सन्ति । वैदिकवाङ्मयस्य उपनिषद्भागः अध्यात्मविद्या-प्रतिपादकः अस्ति । उपनिषत्सु शाश्वतशान्ति-साधकाः मानव-मात्रस्य कल्याणकारकाः उपदेशाः सन्ति ।



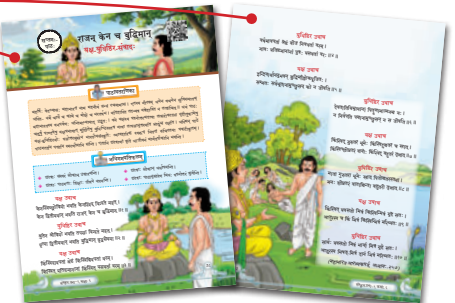
श्रीमद्भगवद्गीता

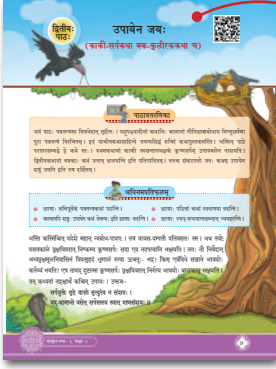
अयं पाठः श्रीमद्भगवद्गीतातः गृहीतः । महाभारतयुद्धस्यारम्भे यदा अर्जुनस्य सारथिः भगवान् श्रीकृष्णः रथम् उभयोः सेनयोः मध्ये स्थापयति, तदा युद्धाय समागतान् स्वजनान् सम्बन्धितश्च दृष्ट्वा अर्जुनः तेषां वधे पापमाशङ्कमानः युद्धात् विरतो भवति । स च युद्धप्रेक्षया भिक्षाचरणम् एव वरं मन्यते । एवम् अर्जुनं मोहग्रस्तं स्वकर्तव्यपराङ्मुखं च दृष्ट्वा भगवान् तस्य मोहनाशाय आत्मनो नित्यतां शरीरस्य नश्वरतां चोपदिशति । कर्तव्यभूताय धर्मयुद्धाय च तं प्रेरयति ।



महाभारतम्

महर्षिः वेदव्यासः महाभारतं नाम महनीयं ग्रन्थं रचयामास । एतस्य गौरवम् अनेन वचनेन सुविख्यातम् अस्ति- धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्षभ । अस्मिन् पाठे यक्ष-युधिष्ठिरयोः प्रश्नोत्तरमुखेन भारतीयसंस्कृतेः व्यावहारिकं स्वरूपं नितरां रुचिरतया प्रकटीकृतम् । पाठगतानि पद्यानि स्मरणीयानि सन्ति । एतानि छात्राणां कृते आजीवनं मार्गदर्शकानि भवन्ति ।





पञ्चतन्त्रकथा

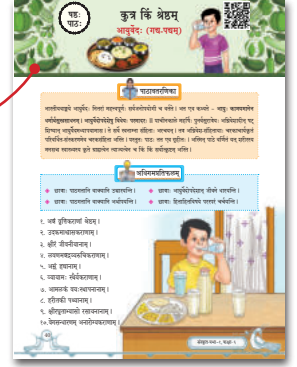
पशुपक्ष्यादीनां कथाभिः बालानां नीतिशास्त्रबोधाय विष्णुशर्मणा पुरा पञ्चतन्त्रं विरचितम् । इदं प्राचीनकथासाहित्ये जगत्प्रसिद्धं रुचिरं कथापुस्तकमस्ति ।

आयुर्वेदः

भारतीयवाङ्मये आयुर्वेदः नितरां महत्त्वपूर्णः सर्वजनोपयोगी च वर्तते । अत एव कथ्यते -

आयुः कामयमानेन धर्मार्थसुखसाधनम् ।

आयुर्वेदोपदेशेषु विधेयः परमादरः ॥

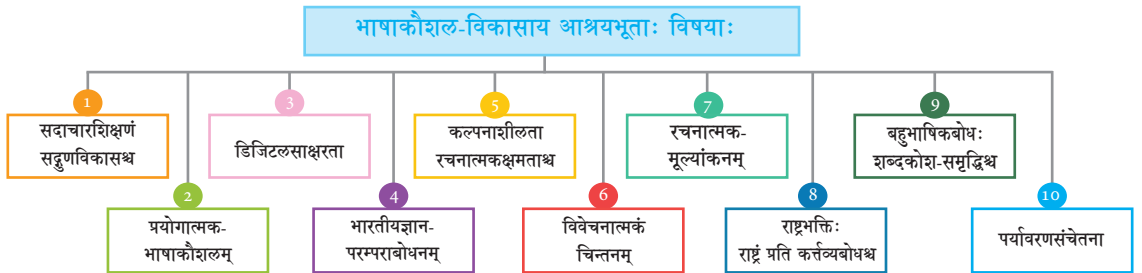


वनवासिवीरः

इयं भारतभूः वीरप्रसविनी इति विख्याता वर्तते । अत्र अनेके शूराः अभवन् । स्वातन्त्र्यप्राप्तये जनजातिसमाजस्य वनवासि-नायकानाम् अपि विशिष्टम् अवदानं वर्तते । एतदतीव गौरवास्पदं वर्तमानसमाजाय नितरां प्रेरकं चास्ति ।

संस्कृतपाठ्यपुस्तिकाः

भारतीयशिक्षाबोर्ड इत्यस्याः संस्थायाः संस्कृतस्य पाठ्यपुस्तकानि छात्राणां भाषाकौशलविकासाय केन्द्रीकृत्य रचितानि सन्ति । 2023 वर्षे निर्धारिताम् आधारभूतां राष्ट्रियपाठ्यचर्यामाश्रित्य योग्यताधारित-कौशलानां विकासार्थं साधितायां पाठ्यपुस्तिकायां भाषाकौशलसंवर्धनाय तेषां सर्वाङ्गीणविकासाय च आश्रयभूताः अधोलिखितविषयाः समाहिताः सन्ति—



पञ्चकोशाः

अस्मिन् पुस्तके छात्राणां सर्वविध-विकासाय विविधाः अभ्यासाः क्रियाकलापाश्च प्रदत्ताः सन्ति । ये चाभ्यासाः अन्नमयकोश-प्राणमयकोश-मनोमयकोश-विज्ञानमयकोश-आनन्दमयकोशैः परस्परं सम्बद्धाः सन्ति । एते अभ्यासाः विद्यार्थिनां सर्वेषां कोशानां संवर्धनं कुर्वन्ति । येन तेषां सर्वाङ्गीणविकासः सुनिश्चितो भवति ।

विज्ञानमयकोशः

प्राणमयकोशः

आनन्दमयकोशः

मनोमयकोशः

अन्नमयकोशः

भारतीय शिक्षा बोर्ड की पाठ्यपुस्तकों के विषय में प्रायः पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1: कोई भी विद्यालय भारतीय शिक्षा बोर्ड (बीएसबी) से कैसे संबद्ध हो सकता है?

उत्तर: संबद्धता उपनियम सहित विस्तृत निर्देश हमारी वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी के लिए, कृपया BSB ग्राहक सहायता नंबर: 8954999000 पर फ़ोन या WhatsApp करें। ईमेल: affiliation@bsb.org.in। BSB कार्यालय समय: प्रतिदिन सुबह 6:00 बजे से रात 10:00 बजे तक।

प्रश्न 2: भारतीय शिक्षा बोर्ड (बीएसबी) द्वारा विकसित पाठ्य पुस्तकों की विशेषताएँ क्या हैं और बोर्ड की पाठ्यपुस्तकें दूसरों से किस तरह अलग हैं?

उत्तर: भारतीय शिक्षा बोर्ड की पाठ्यपुस्तकों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली के आधार पर परीक्षणपूर्वक विकसित किया गया है। पुस्तकों में प्राचीन भारतीय पारंपरिक ज्ञान, शास्त्रों, पारंपरिक प्रथाओं और लोकाचार में उपयुक्त संदर्भ सहित समाहित किया गया है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को 'भारतीय ज्ञान की ओर' अभिमुख होकर वैश्विक नागरिक के रूप में विकसित होने में सक्षम बनाना है। पाठ्यपुस्तकों में सामग्री पाठ्यक्रम और राष्ट्रीय शैक्षिक मानकों के अनुरूप है। पाठ्यपुस्तकें प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणालियों और 21वीं सदी के कौशल को संतुलित संश्लेषण के माध्यम से योग्यता-आधारित शिक्षा पर बल देती हैं।

प्रश्न 3: मैं पाठ्यपुस्तकों की एक प्रति या पूरा सेट कहाँ से प्राप्त कर सकती हूँ?

उत्तर: इच्छुक लोग भारतीय शिक्षा बोर्ड की वेबसाइट <https://bsb.org.in> पर जाकर "पुस्तकों की उपलब्धता" अनुभाग पर क्लिक करके पुस्तकें चुन सकते हैं और ऑर्डर दे सकते हैं। पुस्तकों के स्थानीय विक्रेता भी हैं। इन विक्रेताओं की सूची जानने या किसी अन्य सहायता के लिए, आप निम्नलिखित नंबरों पर संपर्क कर सकते हैं: फ़ोन/WhatsApp: +91 89549 99000।

प्रश्न 4: पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के बारे में कुछ विवरण दीजिए।

उत्तर: पाठ्यपुस्तकें अनुभवी विषय-विशेषज्ञों द्वारा शिक्षा-क्षेत्र के अग्रणी विद्वानों के मार्गदर्शन में विकसित की गई हैं, जैसे:

- डॉ एच.सी. वर्मा (पूर्व प्रोफेसर, आईआईटी कानपुर और 'कॉन्सेप्ट्स ऑफ फिजिक्स' जैसी कई पुस्तकों के प्रसिद्ध लेखक) के मार्गदर्शन में विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें।
- डॉ हुकुम सिंह (पूर्व प्रोफेसर और डीन, अकादमिक और प्रमुख डीईएसएम, डीईके, एनसीईआरटी) के मार्गदर्शन में गणित की पाठ्यपुस्तकें।
- डॉ प्रमोद दुबे (पूर्व प्रोफेसर एनसीईआरटी) और डॉ रामदरश मिश्र (पूर्व प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय और प्रसिद्ध लेखक) के मार्गदर्शन में हिंदी की पाठ्यपुस्तकें।
- जेएनयू के प्रोफेसर माधव गोविंद, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एस.सी. राय एवं प्रोफेसर श्री प्रकाश सिंह के मार्गदर्शन में सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकें।
- प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी (पूर्व-कुलपति), प्रो० श्री निवास वरखेड़ी (कुलपति), डॉ विजय पाल शास्त्री (पूर्व प्रोफेसर) - केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के मार्गदर्शन में संस्कृत की पाठ्यपुस्तकें।
- सुश्री जयश्री कन्नन (स्वतंत्र अंग्रेजी भाषा शिक्षण—ईएलटी सलाहकार) के मार्गदर्शन में अंग्रेजी पाठ्यपुस्तकें।

प्रश्न 5: क्या कोई शिक्षक या विशेषज्ञ भारतीय शिक्षा बोर्ड की पाठ्यपुस्तकों के लिए अपने विचार और सुझाव दे सकता है या कोई सुधार सुझा सकता है?

उत्तर: भारतीय शिक्षा बोर्ड विशेषज्ञों के विचार एवं परामर्श का स्वागत करता है, जिससे 'पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति' द्वारा विचार-विमर्श के बाद, भविष्य के संस्करणों में शामिल करने की योजना पर विचार किया जाएगा।

प्रश्न 6: क्या सीबीएसई, आईसीएसई और राज्य बोर्ड जैसे अन्य बोर्डों के स्कूल भारतीय शिक्षा बोर्ड की पाठ्यपुस्तकों का उपयोग कर सकते हैं?

उत्तर: भारतीय शिक्षा बोर्ड द्वारा विकसित पाठ्य पुस्तकें एनईपी-2020, एनसीएफ-एफएस 2022 और एनसीएफ-2023 के अनुरूप हैं, और राष्ट्रीय शैक्षिक मानकों का पालन करती हैं, इसलिए, अन्य बोर्डों/संस्थानों के लिए भी उपयुक्त/उपयोगी हो सकती हैं।

प्रश्न 7: बीएसबी द्वारा किस पाठ्यक्रम का अनुसरण किया जाता है और यह एनसीईआरटी पैटर्न से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर: बीएसबी पाठ्यपुस्तकें पारंपरिक 'भारतीय ज्ञान परम्परा' को आधुनिक शिक्षण दृष्टिकोणों के साथ एकीकृत करने पर अपने मुख्य केंद्र

के कारण विशिष्ट हैं और एनईपी-2020 और एनसीएफ-2023 के साथ सभी पुस्तकें योग्यता आधारित शिक्षा (सीबीएल) पर जोर देते हुए एक संतुलित दृष्टिकोण को संश्लेषित करती हैं।

प्रश्न 8: क्या बीएसबी पाठ्यपुस्तकें छात्रों को विभिन्न दक्षता परीक्षाओं के लिए तैयार करने के लिए उन्मुख हैं?

उत्तर: बीएसबी पुस्तकों का अध्ययन करने वाले छात्र प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अच्छी तरह से सुसज्जित होंगे क्योंकि बीएसबी पाठ्यक्रम पूरी तरह से एनईपी 2020 और एनसीएफ 2023 पर आधारित है। राष्ट्रीय ढांचे जेईई और एनईईटी आदि जैसी परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए आवश्यक वैचारिक समझ और योग्यता-आधारित शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि छात्रों को उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक आधार प्राप्त हो।

प्रश्न 9: उपनियमों के अनुसार सभी श्रेणियों की संबद्धता के लिए ऑफलाइन/ऑनलाइन आवेदन आम तौर पर कब प्रस्तुत करने की अनुमति दी जाती है?

उत्तर: इन उपनियमों के दायरे में आने वाली सभी श्रेणियों के लिए ऑनलाइन/ऑफलाइन आवेदन सामान्यतः 1 जनवरी को शुरू होंगे और किसी विशेष कैलेंडर वर्ष की 31 दिसंबर तक बंद हो जाएंगे। अधिक जानकारी के लिए, संबद्धता उपनियमों के अध्याय संख्या 10, खंड संख्या 10.4.3 पढ़ें।

प्रश्न 10: संबद्धता और संगठन का क्या अर्थ है?

उत्तर: **संबद्धता का अर्थ है** - वे विद्यालय जो कक्षा 8 तक राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं और कक्षा 10 या 12 तक भारतीय शिक्षा बोर्ड से संबद्ध होना चाहते हैं, या वे विद्यालय जो कक्षा 10 या 12 तक पहले से ही किसी अन्य शिक्षा बोर्ड से संबद्ध हैं और भारतीय शिक्षा बोर्ड में शामिल होना चाहते हैं।

संगठन का अर्थ है - वे विद्यालय जो कक्षा 8 तक राज्य सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं तथा भारतीय शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित समस्त पाठ्यपुस्तकों का शत-प्रतिशत क्रियान्वयन सुनिश्चित करने, बोर्ड द्वारा आयोजित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भागीदारी करने तथा परीक्षाओं के दौरान बोर्ड की मूल्यांकन प्रक्रिया का अनुपालन करने के लिए पूर्णतः प्रतिबद्ध हैं - ऐसे विद्यालय कक्षा 8 तक भारतीय शिक्षा बोर्ड से संबद्ध हैं।

प्रश्न 11: क्या स्कूल संबद्धता के लिए आवेदन कर सकता है भले ही भूमि दो अलग-अलग परिसरों में हो?

उत्तर: यदि स्कूल पहले से ही एक परिसर में कक्षा 8वीं तक चल रहा है और दूसरे परिसर में 9वीं से 12वीं तक की संबद्धता लेना चाहता है, तो ऐसी स्थिति में भी स्कूल संबद्धता के लिए आवेदन कर सकता है, लेकिन भूमि उसी स्थानीय सरकारी प्राधिकरण के अधीन और उसी राजस्व क्षेत्र में होनी चाहिए। हालाँकि, यह निर्णय बोर्ड द्वारा मामले-दर-मामला आधार पर लिया जाएगा।

प्रश्न 12: क्या स्कूल किसी सोसायटी या किसी अन्य स्कूल के साझा खेल के मैदान का उपयोग कर सकता है?

उत्तर: हाँ, स्कूल किसी अन्य मैदान का उपयोग कर सकता है, लेकिन इसके लिए स्थानीय प्राधिकरण से उचित अनुमति लेनी होगी। यदि एक से अधिक स्कूल एक ही खेल मैदान का उपयोग कर रहे हैं, तो खेल का समय एक जैसा नहीं होना चाहिए। दूसरी बात, यह मैदान पास में होना चाहिए ताकि छात्र इसका उपयोग कर सकें।

प्रश्न 13: क्या जनजातीय क्षेत्र और पहाड़ी क्षेत्र के स्कूलों के लिए संबद्धता लेने हेतु कोई विशेष प्रावधान है?

उत्तर: हां, क्षेत्रीय विशेषताओं के आधार पर अधिसूचित पहाड़ी और जनजातीय क्षेत्रों के लिए कुछ विशेष प्रावधान हैं, ताकि स्थान की भू-आर्थिक परंपराओं और पर्यावरण-अनुकूल संस्कृति को बढ़ावा दिया जा सके और अधिसूचित जनजातीय क्षेत्र में बीएसबी ने स्कूल संबद्धता शुल्क के लिए 50% शुल्क रियायत भी प्रदान की है।

प्रश्न 14: क्या बीएसबी शिक्षक प्रशिक्षण आयोजित करता है?

उत्तर: हाँ, प्रत्येक संबद्ध/सहयोगी विद्यालय वार्षिक प्रशिक्षण और त्रैवार्षिक प्रशिक्षण आयोजित करेगा। अधिक जानकारी के लिए संबद्धता उपनियमों के अध्याय संख्या 16, खंड संख्या 16.1 और 16.2 पढ़ें।

प्रश्न 15: वे कौन सी शर्तें हैं जिनके तहत किसी स्कूल की भारतीय शिक्षा बोर्ड से संबद्धता रद्द की जा सकती है (संबद्धता रद्द करना)?

उत्तर: यदि कोई विद्यालय बोर्ड के संबद्धता उपनियमों/परीक्षा उपनियमों के प्रावधानों का उल्लंघन करता पाया जाता है या बोर्ड के निर्देशों का पालन नहीं करता है, तो बोर्ड उस विद्यालय की संबद्धता रद्द कर देगा। अधिक जानकारी के लिए, संबद्धता उपनियमों के अध्याय संख्या 13, खंड संख्या 13.2 पढ़ें।

स्वामी रामदेव और आचार्य बालकृष्ण एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना करते हैं, जो बौद्धिक रूप से कुशल, नैतिक एवं आध्यात्मिक रूप से सुदृढ़ तथा सर्वांगीण व्यक्तित्वों का निर्माण करें। शिक्षा संबंधी उनका दृष्टिकोण पारंपरिक भारतीय ज्ञान को समकालीन शैक्षणिक सिद्धांतों के साथ सहजता से जोड़ता है, जो आत्म-साक्षात्कार और समग्र विकास पर केंद्रित है। वे विद्यार्थियों में अनुशासन, सम्मान और नैतिक अखंडता जैसे मूल्यों को स्थापित करने के महत्व पर जोर देते हैं। उनके अनुसार, शिक्षा को चरित्र निर्माण में सहायता करनी चाहिए और समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को बढ़ावा देना चाहिए। वास्तविक शिक्षा पाठ्यपुस्तकों और परीक्षाओं से परे मन, शरीर और आत्मा का पोषण करती है एवं विद्यार्थियों को 21वीं सदी के आवश्यक कौशल से युक्त करती है ताकि वे आधुनिक संसार में समाज एवं राष्ट्र पर सकारात्मक प्रभाव निर्मित करने योग्य बनें।



भारतीय शिक्षा बोर्ड का लक्ष्य एक समावेशी एवं प्रगतिशील शैक्षणिक वातावरण का निर्माण करना है, जिससे विद्यार्थी भविष्य के जिम्मेदार नागरिक और सक्षम नेतृत्व के गुणों से परिपूर्ण हो सकें। समकालीन शैक्षिक परिदृश्य में, प्राचीन भारतीय ज्ञान और सांस्कृतिक विरासत के साथ-साथ आधुनिक दक्षताओं को एकीकृत करने की आवश्यकता बढ़ी है, जिसके माध्यम से ऐसे सन्तुलित एवं समीचीन व्यक्तित्वों का निर्माण करना है, जो न केवल समकालीन कौशल में निपुण एवं आर्थिक विकास को प्राथमिकता देने की क्षमता रखते हों, बल्कि अपनी सांस्कृतिक पहचान और नैतिक मूल्यों से भी सुदृढ़ता से जुड़े रहें। शिक्षा को पर्यावरणीय जागरूकता के साथ वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देना चाहिए। शिक्षा सामाजिक न्याय और समानता को विकसित करने के महत्वपूर्ण उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है तथा एक ऐसे समाज को गढ़ती है, जहाँ हर पृष्ठभूमि के व्यक्ति को समुचित विकास का अवसर मिलता है। इसके अलावा, यह विद्यार्थियों की समाज में भागीदारी और योगदान को प्रोत्साहित करती है, जो समाज में आर्थिक, सांस्कृतिक और लोकतान्त्रिक वातावरण के संवर्धन हेतु महत्वपूर्ण है। इन सभी तत्वों का समन्वय एक समृद्ध, प्रगतिशील और समरस वैश्विक समुदाय के विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

डॉ एन.पी. सिंह

आई.ए.एस. (सेवानिवृत्त)

कार्यकारी अध्यक्ष

भारतीय शिक्षा बोर्ड

विद्या ही सच्चा अविनाशी धन है।

—तिरुवल्लुवर



शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मनुष्यों में ऐसी जागरूकता उत्पन्न करना है जिससे वे सत्य एवं असत्य का अंतर समझ सकें।

—महर्षि दयानंद सरस्वती

शिक्षा मनुष्यों की पूर्णता, जो उसमें पहले से विद्यमान हैं, की अभिव्यक्ति है।

—स्वामी विवेकानंद



जागो, उठो और शिक्षित करो।

—सावित्रीबाई फुले

शिक्षा का उद्देश्य कौशल और विशेषज्ञता से युक्त अच्छे मनुष्यों का निर्माण करना है।

—ए.पी.जे. अब्दुल कलाम



भारतीय शिक्षा बोर्ड

पतंजलि योगपीठ, फेज-1, दिल्ली-हरिद्वार राजमार्ग,

बहादुराबाद, हरिद्वार-249405 (उत्तराखण्ड)

+91 7982817158, 9936442616

ई-मेल : info@bsb.org.in

वेबसाइट : bsb.org.in